Appendix-1

परिशिष्ट : १ :

मन्नू भंडारी

से

साक्षात्कार

मन्नू जी से साक्षात्कार :

दिनांक ०८-०८-२००२ को शाम चार बजे मैं, मेरा मित्र प्रा. दिलीप पटेल तथा मेरे बड़े सुभाष भाई हम तीनों कथाकार मन्नू भंडारी से भेंट करने उनके घर हौजखास अपार्टमेंट दिल्ली पहुँचे। मैंने पहले से ही साक्षात्कार करने की अनुमति ले ली थी। उस समय शर्दीला मौसम था। मैंने पहलीबार दिल्ली की शर्दी को महसूस किया, जैसे ही हम उनके घर पहुँचे मन्नू जी अपना सब काम छोड़ कर हमारे साथ उनके रीडिंग रूम में बैठ गई। रूम काफी बड़ा था, उसमें मीनी लाइब्रेरी थी। कमरे को गर्म करने के लिए मन्नू जी खुद ही उठ कर हीटर शुरू कर दिया। लगभग तीन घंटे तक हम लोग बैठे, काफी बातें हुई। हमें जरा-सी भी उम्मीद नहीं थी कि इतनी बड़ी लेखिका तीन घंटे तक साक्षात्कार करेंगी। मैंने उनके कथा साहित्य पर किये गये रिसर्चों की चर्चा की, तब उन्होंने कहा कि मुझे तो मालूम भी नहीं है कि मेरे कथा साहित्य पर इतना सारा काम हो रहा है। हॉ, कुछ काम हुआ है उसकी किताबें मेरे पास हैं। ऐसा कहकर कुछ किताबें देखने के लिए मुझे दी। फिर मैंने मेरे पी-एच.डी. के विषय की चर्चा की। मेरे, रिसर्च विषय का नाम सुनकर बहुत प्रसन्न हुई, साथ मैं सूचन भी किया कि मेरे जीवन के बारे में कई लोग गलत-गलत परिचय अपनी किताब में देते हैं उसको आप जरूर सुधारना। मैंने अपने जीवन की सही बातें 'समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका' में 'एक यह भी कहानी' शीर्षक लेख में लिखी है जिसकी जेरोक्स मैं आपको देती हूँ, उसको केन्द्र में रखकर आप मेरे जीवन परिचय का चित्रण करना। मेरे पास आधुनिक तकनीकी यंत्र (टेपरेकार्ड) था। उसमें जितने भी प्रश्न मैंने उनसे किये उसका रेकार्डिंग किया है, जिसका हूबहू चित्रण निम्नलिखित है-

प्रश्न-१- कहानी और उपन्यास में क्या अन्तर है ?

मन्नू भंडारी- उपन्यास आकार से बड़ा होता है और कहानी छोटी होती है।

उपन्यास बड़े फलक का होता है, कहानी में एक छोटी-सी घटना या कोई प्रमुख घटना का चित्रण होता है। उपन्यास बड़े फलक का होने के कारण उसमें घटना के कारण और कहीं-कहीं निवारण का जिक्र आ सकता है। उपन्यासों में कई उतार-चढ़ाव आते हैं। कहानी तीर की भाँति आगे बढ़ती है।

२. कहानी और उपन्यास में शिल्प का महत्व कितना होता है ?

मन्नू भंडारी : कहानी और उपन्यास में शिल्प का महत्व तो होता ही है, लेकिन शिल्प का इतना आग्रह भी न होना चाहिए। कथ्य के बिना शिल्प का कोई महत्व नहीं है। मेरा लिखने का आशय शिल्प का चमत्कार प्रस्तुत करना नहीं है। शिल्प के महत्व को समझाते हुए उन्होंने 'महाभोज' उपन्यास का उदाहरण दिया और कहा हम रोज अखबार में अनेक घटनाएँ पढ़ते हैं और अखबारी घटनाओं को केन्द्र में रखकर मैंने 'महाभोज' उपन्यास लिखा। अखबारी घटनाओं की भाषा तो होती है लेकिन कोन-सी चीज ऐसी होती है जो उपन्यास का रूप धारण करता है। वह है मेरी दृष्टि से शिल्प। शिल्प के साथ-साथ संवेदना का भी बहुत महत्व होता है। इस प्रकार उपन्यास और कहानी में कथ्य और शिल्प का महत्व होता है। आपको हर बार नये नये प्रयोग करने पड़ते हैं लेकिन कथ्य पहले आता है, शिल्प बाद में आता है। कथ्य ऐसा होना चाहिए कि मेरे मन में जो प्रभाव पड़ा है ऐसा ही प्रभाव पाठकों पर भी पड़े, यानीकि मेरी संवेदना को समझ सकें।

३. 'महाभोज' उपन्यास पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि आप दलितों की मसीहा हैं।

मन्नू भंडारी : पहली बात तो यह है कि मैं दलितों की कोई मसीहा नहीं हूँ। लेकिन आज दलितों की जो स्थिति है उससे मैं बहुत नाराज हूँ। दलित वर्ग एक मोहरे हैं। राजनेता लोग उसका मात्र वोटर के रूप में उपयोग करते हैं। राजनेता अपने ओहदे को बचाने के लिए अपनी वोटबैंक के रूप में दलितों का उपयोग

करते हैं। आज भी कई दलितों को 'महाभोज' के बिस्सू की तरह मार दिया जाता है और कितने ही दलितों के घर जिस प्रकार 'महाभोज' में जलते हैं उसी प्रकार आज भी जलते हैं, जलते रहेंगे, उसमें मुझे कोई सुधार, परिवर्तन दिखता नहीं है। हमारी राजनीति में कहीं न कहीं खोट है, उसे कोई भरपाई नहीं कर सकता। 'महाभोज' में दलितों की समस्याओं का जो चित्रण हुआ है यही आज के दलितों की वास्तविक स्थिति है। हाँ, मैं आपको जरूर यह बताना चाहूँगी कि मैं दलितवाद का नारा लगानेवाली लेखिका नहीं हूँ।

४. 'महाभोज' में आपने भ्रष्ट राजनीति एवं भ्रष्ट नेताओं की पोल खोली है उसे पढ़कर तो ऐसा लगता है कि आप भी राजनीति में रही होंगी ?

मन्नू भंडारी :नही, राजनीति से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। हॉ, मैं यह जरूर बताना चाहूँगी कि दिल्ली में जो राजनीति चल रही है उसी से मुझे मालूम हुआ कि राजनीति क्या चीज है ? मैंने जो देखा और पढ़ा व अनुभव किया उसी का हूबहू चित्रण अपने कथा साहित्य में किया। आज की राजनीति इतनी घटिया हो गई है कि आज राजनेता और राजनीति शब्द से बू आती है।

५. आपका कथा साहित्य नारीवाद से अधिक प्रभावित है ।

मन्नू भंडारी :मैं कोई नारीवादी लेखिका नहीं हूँ। नारीवाद से मैं सहमत नहीं हूँ। मेरी साठ प्रतिशत कहानियाँ सामाजिक समस्याओं से ओतप्रोत हैं और जहाँ समाज आता है वहाँ पुरुष भी आता है, नारी भी आती है। मैं आपको 'सज़ा' कहानी का उदाहरण देना चाहती हूँ - यह कहानी हमारे न्यापालिका की धज्जियाँ उड़ाती है। हमारे देश की न्याय व्यवस्था खोखली हो गई है। कई वर्षों तक कोर्ट में केस चलते हैं और जब कई अर्शे बाद फैसला आता है और व्यक्ति को निर्दोष करार दिया जाता है, लेकिन 'सज़ा' में आशा के पिता की नौकरी चली जाने के दौरान पिता-माता, भाई का जीवन दुःखदायक हो जाता है। वो लोग बहुत कष्ट सहते हैं उसके बाद आशा के पिता को निर्दोष करार दिया जाता है।

लेकिन क्या जितने अर्शे तक केस चला उस समय तक कितनी सजा पाई है। जिसमें आशा की बात आती है, आशा नारी है तो क्या यह नारीवादी कहानी हो गई ? मेरी प्रतिबद्धता जीवन और जीवन की समस्याओं से है। हाँ, जहाँ नारी का शोषण होता है वहाँ मैं जरूर नारीवादी हूँ।

६. 'एक इंच मुस्कान' और 'आपका बंटी' इन दोनों में से आप किसको अच्छा उपन्यास मानती हैं ?

मन्नू भंडारी : 'आपका बंटी' उपन्यास यह मेरा निजी उपन्यास है। इस उपन्यास में मैंने बंटी की संवेदना को यथार्थता के साथ चित्रित किया है। यह उपन्यास मुझे ही नहीं कई पाठक वर्ग को पसन्द आया है। 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास से मुझे कई अर्शे से रोयल्टी मिलती है, मिल रही है। यह नया प्रयोगात्मक उपन्यास है। लेकिन जितनी लोकप्रियता 'आपका बंटी' उपन्यास को मिली है उतनी 'एक इंच मुस्कान' को नहीं मिली। मैं जरूर कहूँगी 'एक इंच मुस्कान' से ज्यादा 'आपका बंटी' उपन्यास अच्छा है। हालाँकि कोई भी लेखक का खुद का लिखा गया साहित्य उसे पसंद होता ही है।

७. कथ्य और शिल्प की दृष्टि से हर-एक लेखक की अपनी-अपनी अलग तकनीकी होती है। अलग-अलग कल्पनाक्षेत्र, भावनाक्षेत्र होता है, लेकिन आपने और यादव जी ने 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास लिखकर असंभव बात को संभव कैसे कर दिखाया ?

मन्नू भंडारी : 'एक इंच मुस्कान' मेरा सहयोगी एवं प्रयोगात्मक उपन्यास है। ऐसा प्रयोगात्मक उपन्यास लिखने का प्रयास कई अर्से पहले हमारे हिन्दी लेखकों ने किया था। जिसका नाम -'ग्यारह सपनों का देश'था , लेकिन वे लेखक सफल नहीं हुए। जहाँ तक भावनाक्षेत्र का सवाल है वहाँ इस उपन्यास में मैंने और यादव जी ने सात-सात प्रकरण लिखे। जैसे कि पहला प्रकरण मैंने लिखा तो दूसरा प्रकरण यादव जी ने लिखा। कुल चौदह प्रकरण लिखे। पुरुष पात्र को

राजेन्द्र जी ने सँवारा और नारी पात्रों को मैंने। यह उपन्यास पाठक को इतना अच्छा लगा कि आज तक हमें रोयल्टी मिलती है। यह एक सहयोगी व प्रयोगात्मक सफल उपन्यास है।

८. शरतचंद्र की कहानी को आपने उपन्यास का स्वरूप कैसे दिया ?

मन्नू भंडारी : बासू चटर्जी शरतचंद्र की 'स्वामी' कहानी पर फिल्म बनाने वाले थे इसलिए उस कहानी में कुछ फेरबदल करके कुछ बड़ा स्वरूप देना था। कथाकार शरतचन्द्र ने अपनी एक छोटी-सी रचना 'स्वामी' में सौदामिनी की हृदयस्पर्शी कहानी लिखी थी। मैंने उसको लघु उपन्यास का रूप देकर भारतीय साहित्य में एक नया प्रयोग किया। शरतचंद्र ने अपनी कहानी में प्रेमी को विलन बना दिया था। लेकिन आज परिस्थिति विकट बन गयी है। सौदामिनी में आद्यंत आत्म-भर्त्सना और आत्म-धिक्कार का भाव भरा हुआ था। शरत् की सौदामिनी को पूर्व प्रेमी नरेन्द्र कलकत्ते जाकर कमरे में बंद कर देता है और प्रेमी को आगे भाई बना देनेवाली घटना आती है जो हास्यास्पद लगती है। इसलिए मैंने कहानी का अंतिम हिस्सा एकदम बदल दिया। उसके चरित्र में मैंने नया जोस, नये विचार भरे। यह आत्म-धिक्कार और पापबोध की कहानी थी, मैंने उसे सहज मानवीय अंतर्द्वन्द्व का रूप दे दिया।

९. 'आपका बंटी' उपन्यास की मूल संवेदना क्या है ?

मन्नू भंडारी : 'आपका बंटी' उपन्यास में मैंने पढ़ी हुई एक शिक्षित नारी एवं पुत्र की संवेदना का चित्रण किया है। पहले के जमाने में औरत की सहनशक्ति के कारण कई परिवार टूटते-टूटते बच जाते थे। आज नारी पढ़-लिखकर बहुत आगे बढ़ चुकी है। अब उसकी सहनशक्ति ने जवाब देना शुरू कर दिया है। आज परिवार टूटने लगे हैं। पति-पत्नी को अलग हो जाने में थोड़ा-सा भी समय नहीं लगता। दोनों तलाक के बाद अपनी अपनी शादी कर भी लेते हैं। लेकिन तीसरा आयाम जो बच्चा है उस निर्दोष को अलग रहने की सजा भुगतनी

पड़ती है। पिता दूसरी शादी कर ले यह तो बच्चा सहन कर लेता है लेकिन माँ जब दूसरे के साथ शादी कर लेती है तो बच्चा सहन नहीं कर पाता। आज कल तो एक-दूसरे को सुधारने के लिए भी बच्चे का उपयोग होता है। इस उपन्यास की कथा के कारण कई लोगों ने मुझे कहा कि आप कला की विरोधी हैं। मैंने उन लोगों को बताया कि ऐसी विकट परिस्थिति में बच्चों को तैयार करना ही पड़ेगा। यह मेरा प्रमुख उद्देश्य है।

*